श्री दत्तात्रेय दिव्य प्रयोग

By 💖 Prakash Ji 💖
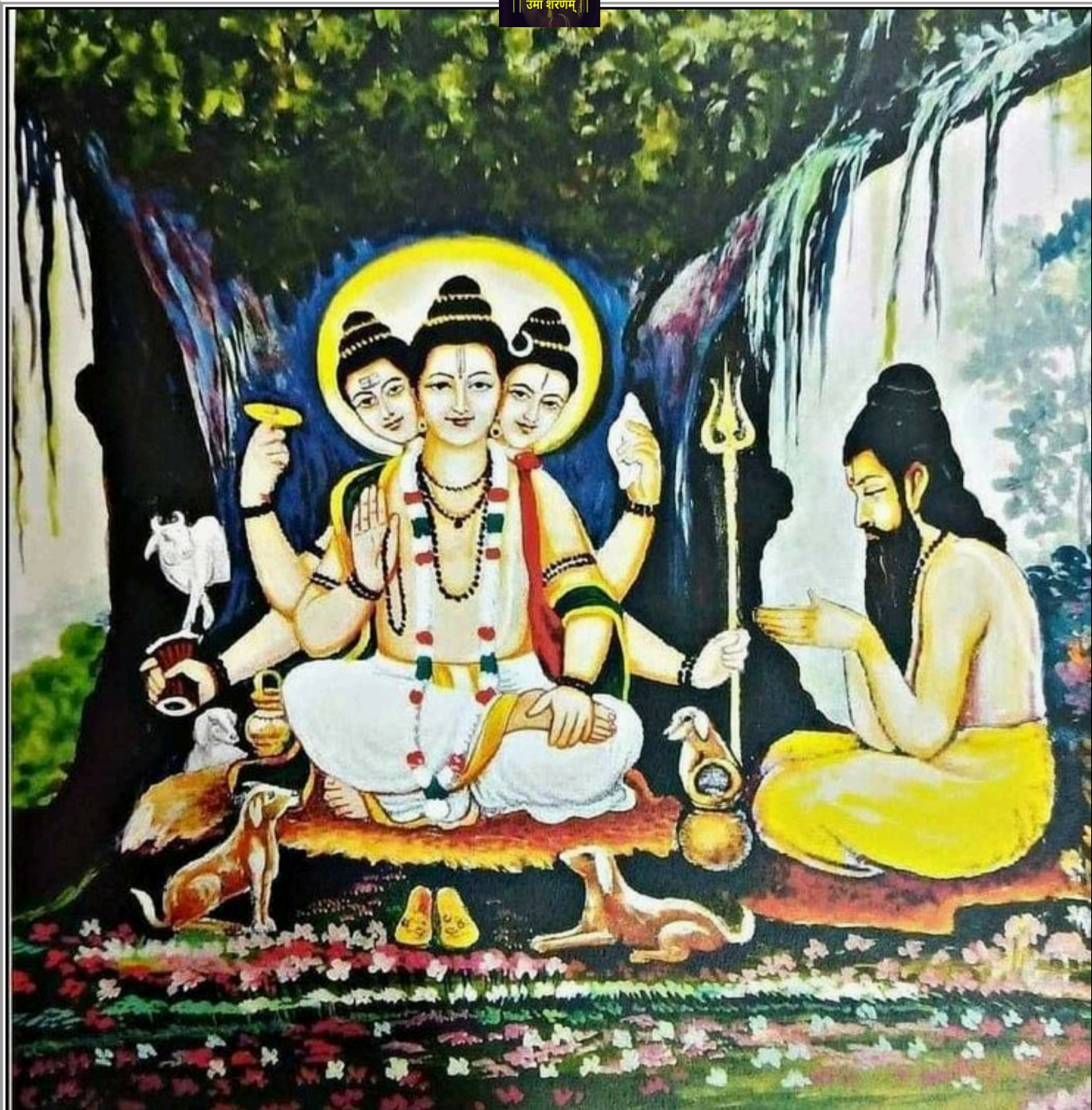
श्री दत्तात्रेय उपासकों के लिए एक अत्यंत उपयोगी खजाना

श्री दत्तात्रेय दर्शन कारक दिव्य अनुभूत प्रयोग

By 💖 Prakash Ji 💖

मेरे प्यारे शिष्यों..... मेरी एक शिष्य थे.... वह आज भी मेरे शिष्य हैं....हो बार-बार मुझे फोन किया करते थे कि गुरुदेव आप कभी हमारे घर पर आइए..... गुरुदेव हम आपके घर में नहीं हमारे दिल में बसते हैं और हमारा सब कुछ.... आपका ही है...... यह जो हमारे शिष्य थे यह भगवान दत्तात्रेय के एक बहुत बड़े भक्त थे.... । जब भी हमारा फोन पर बात होता था यह कुछ बोले ना बोले एक बात हमें जरूर कहा करते थे कि गुरुदेव हमें भगवान दत्तात्रेय का दर्शन करवा दीजिए । हे श्री गुरुदेव आपके लिए कोई भी कार्य असंभव नहीं है..... आप कृपया हमें भगवान दत्तात्रेय का दर्शन करवा दीजिए । मैं उनके हां में हां भरत जाता था और एक बात उन्हें समझाया करता था कि उचित समय आने पर आपको भगवान दत्तात्रेय का दर्शन जरूर होगा परमात्मा के ऊपर विश्वास रखिए ,भगवान के ऊपर विश्वास रखिए ।

कुछ महीना बीत गया..... एक बार उनका पत्नी का हमें फोन आया रात के 11:30 बजे..... मैं उनसे कहा कि पुत्री इतनी रात में फोन क्यों किये हो..... कोई समस्या हुई क्या........ उनके पत्नी बोले..... क्या कहें गुरुजी यह हर दिन मेरे सामने रातभर रो रहे हैं...... घर द्वार सब कुछ छोड़कर चले जाने की बात कर रहे हैं.... गुरुजी ऐसा होगा तो कैसे चलेगा...... गुरुजी आप मुझे पुत्री मानते हैं......

आपकी पुत्री के लिए ही सही इनका मनोकामना थोड़ा पूरी कर दीजिए । गुरुजी यह तो सोना चांदी नहीं दत्तात्रेय जी का दर्शन चाहते हैं........ ऐसे आदी आदी और भी बहुत सारी बातें उन्होंने मुझे की । उसके बाद मैंने कहा कि पुत्री उसको फोन दो....... उन्होंने बोले कि गुरुदेव यह फोन पकड़ने की हालत में नहीं है केवल रोते जा रहे हैं.... मैं बस इतना कहा कि उन्हें कह दो की उचित समय आ गया है..... अव हो... इस दिव्य आध्यात्मिक अनुष्ठान के लिए पूर्ण तयायोग्य हैं ।

सुबह हुआ । मैं उनसे फोन किया । मैं उन्हें दत्त भगवान का एक शास्त्रीय मंत्र देने ही जा रहा था उन्होंने बोले कि गुरुदेव मंत्र जाप मुझसे ना हो पाएगा.... मंत्र जाप अनुष्ठान में कोई ना कोई गलती जरूर रह जाता है.... मुझे प्रभु कोई सरल से सरल मार्ग दिखाइए जिसके जरिए में दत्त भगवान का दर्शन प्राप्त करसकुं । मैं पहले से ही जानता था कि इस प्राणी का भगवान दत्तात्रेय के प्रति अनावील भक्ति है..... इसी कारण मैं उसे मात्र एक स्तोत्र दिया था । और वह स्तोत्र पूर्ण रूपेण अनुभूत स्तोत्र था । अपने आप में अद्भुत था और शास्त्रीय भी था । मैं उन्हें प्रयोग दिया । प्रयोग संपन्न में उन्हें चार महीना लग गया । पर उन्हें भगवान दत्तात्रेय जी का पूर्ण रूप से दर्शन हुआ ।

भगवान दत्तात्रेय उन्हें एक ब्रह्मचारी बालक के रूप में दर्शन दिए थे जो उनके घर में भिक्षा मांगने आया था । और एक रुद्राक्ष की माला भी उपहार के स्वरूप में देकर गए । जो कि आज भी उनके पास है । और बहुत बाद में जाकर उनको पता चला कि वह ब्रह्मचारी बालक और कोई नहीं साक्षात् भगवान दत्तात्रेय ही थे.... क्योंकि वही ब्रह्मचारी बालक उन्हें स्वप्न में भी दिखाई दिया.....था..... जब इन महाशय बार-बार भगवान दत्तात्रेय को प्रार्थना कीए थे कि प्रभु आप मुझे दर्शन क्यों नहीं दे रहे हैं.......

अगर आपके पास चार महीना है । और भगवान दत्तात्रेय की दर्शन के लिए अगर आप लालायित हैं..... तो यह दिव्य अनुष्ठान केवल ही केवल आपके लिए है । अब चलिए मैं प्रयोग विधान बता देता हूं ।

अथ प्रयोग विधान

यह अनुष्ठान का प्रारंभ या तो किसी भी महीना की पूर्णिमा से करें या फिर किसी भी महीना की शुक्ल पक्ष की गुरुवार से करें । सबसे पहले नर्सरी से एक छोटा सा औदुंवर का पौधा मंगा लीजिए । इसे गूलर का पौधा भी कहा जाता है । यह नर्सरी में आराम से मिल जाएगा । गांव देहाती में ढूंढेंगे तो भी मिल जाएगा ।

उस औदुम्बर यानी कि गूलर का एक छोटा सा पौधा लाकर उस पौधा का सेवा करें । उसके पश्चात सर्वप्रथम उत्तर दिशा में या तो दत्तात्रेय जी का कांसे की अथवा तांबे का मूर्ति स्थापितकरें.... अथवा एक बड़ा सा फोटो चित्र स्थापित करें ।

उसके सामने अनुष्ठान काल में उस औदुम्बर का पौधा को रखिए । साक्षात दत्तात्रेय मानकर उस पौधा का तथा उसे फोटो चित्र का पूजार्चना करें । कलश स्थापना करना ना भूलें। पूजा चना से पहले संकल्प लेना ना भूलें। केवल पहले दिन ही आपको संकल्प लेना पड़ेगा । मैं नीचे जैसे-जैसे आप लोगों को निर्देशित किया हूं हाथ में जल धारण पूर्वक वैसे-वैसे ही संकल्प ले लें और अंत में जल को पृथ्वी में गिरा दें ।

" अद्येत्यादि० अमुक गोत्रोहं (अपना गोत्र बोलें/ अगर स्वयं का गोत्र नहीं जानते हैं तो कश्यप बोलें), अमुकनामाहं (अपना नाम बोलें)मम श्री दत्तात्रेय देवताप्रीत्यर्थं अद्यारभ्य अष्टोत्तरशतदिन पर्यन्त प्रत्यहं अष्टोत्तरशत-संख्यया........ स्तोत्र पाठान् करिष्ये ।"

संकल्प के बाद यथाशक्ति पूजन पूर्वक यथाशक्ति नैवेद्य अर्पित करें । मिश्री, पेड़ा, या फिर जो भी भोग हो.... आप दत्तात्रेय जी को अर्पित करें । उसके बाद । स्तोत्र का नित्य 108 पाठ करें ।

ब्रह्म मुहूर्त 3:30 बजे से लेकर 6:00 बजे तक तथा ठीक उसी भांति रात्रि काल में फिर ढाई घंटा निकाल लें । 108 दिनों के अंदर भगवान दत्तात्रेय किसिना किसी स्वरूप में व्यक्ति को जरूर दर्शन देते हैं इसमें किसी भी प्रकार का कोई संदेह नहीं है । जब आपको आभास हो जाएगी आप दर्शन प्राप्त कर चुके हैं.....तव यथाशक्ति ब्राह्मण बालकों को स्वादिष्ट व्यंजन अवश्य खिलाइएगा । इस अनुष्ठान में आपको किसी निर्दिष्ट नीति नियम की पालन करने की कोई जरूरत नहीं है । नित्य दैनंदिन जीवन में अपने घर गृहस्ती में जैसे रहते हैं आप वैसे रहें । बस स्तोत्र को जैसे पाठ करने के लिए कहा गया है उसि भांति पाठ करें। बाकी समय में भगवान दत्तात्रेय का नाम का स्मरण करते रहिए । यह स्तोत्र के बल पर आपके शत्रुओं का भी मर्दन हो जाएगा और साथ ही साथ आपके बड़े से बड़े पापों का भी नाश हो जाएगा...... आपके भाग्योदय भी होगा । इस साधना के संपन्न करने के पश्चात आपके जीवन में अनेक प्रकार के ज्ञान विज्ञान का दिव्यतम रास्ता खुल जाएगा.... जो इसी दुनिया का होकर भी किसी अलग दुनिया से नाता रखता हो..........आप लोगों के सुविधा के लिए नीचे में दिव्यस्तोत्र को प्रदान कर रहा हूं । इस दिव्य प्रयोग को संपन्न करके इसका भरपूर लाभ उठाइए । और एक बात का विशेष ध्यान रखिएगा..... औदुम्बर यानी कि गुलर का पौधा को तब पूजा कक्ष में लेकर जाइए जब आप अनुष्ठान करने जा रहे हैं । उसके बाद फिर उसे बाहर आंगन में रख दीजिए ताकि हो खुले हवा पाकर पनप सके ।

श्रीदत्तात्रेयस्तोत्रम्

जटाधरं पाण्डुरङ्गं शूलहस्तं कृपानिधिम् ।
सर्वरोगहरं देवं दत्तात्रेयमहं भजे ॥

अस्य श्रीदत्तात्रेयस्तोत्रमन्त्रस्य भगवान् नारदऋषिः ।
अनुष्टुप् छन्दः । श्रीदत्तपरमात्मा देवता । श्रीदत्तप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥

जगदुत्पत्तिकर्त्रे च स्थितिसंहार हेतवे ।
भवपाशविमुक्ताय दत्तात्रेय नमोऽस्तुते ॥ १॥

जराजन्मविनाशाय देहशुद्धिकराय च ।
दिगम्बरदयामूर्ते दत्तात्रेय नमोऽस्तुते ॥ २॥

कर्पूरकान्तिदेहाय ब्रह्ममूर्तिधराय च ।
वेदशास्त्रपरिज्ञाय दत्तात्रेय नमोऽस्तुते ॥ ३॥

ह्रस्वदीर्घकृशस्थूल-नामगोत्र-विवर्जित ।
पञ्चभूतैकदीप्ताय दत्तात्रेय नमोऽस्तुते ॥ ४॥

यज्ञभोक्ते च यज्ञाय यज्ञरूपधराय च ।
यज्ञप्रियाय सिद्धाय दत्तात्रेय नमोऽस्तुते ॥ ५॥

आदौ ब्रह्मा मध्य विष्णुरन्ते देवः सदाशिवः ।
मूर्तित्रयस्वरूपाय दत्तात्रेय नमोऽस्तुते ॥ ६॥

भोगालयाय भोगाय योगयोग्याय धारिणे ।
जितेन्द्रियजितज्ञाय दत्तात्रेय नमोऽस्तुते ॥ ७॥

दिगम्बराय दिव्याय दिव्यरूपधराय च ।
सदोदितपरब्रह्म दत्तात्रेय नमोऽस्तुते ॥ ८॥

जम्बुद्वीपमहाक्षेत्रमातापुरनिवासिने ।
जयमानसतां देव दत्तात्रेय नमोऽस्तुते ॥ ९॥

भिक्षाटनं गृहे ग्रामे पात्रं हेममयं करे ।
नानास्वादमयी भिक्षा दत्तात्रेय नमोऽस्तुते ॥ १०॥

ब्रह्मज्ञानमयी मुद्रा वस्त्रे चाकाशभूतले ।
प्रज्ञानघनबोधाय दत्तात्रेय नमोऽस्तुते ॥ ११॥

अवधूतसदानन्दपरब्रह्मस्वरूपिणे ।
विदेहदेहरूपाय दत्तात्रेय नमोऽस्तुते ॥ १२॥

सत्यंरूपसदाचारसत्यधर्मपरायण ।
सत्याश्रयपरोक्षाय दत्तात्रेय नमोऽस्तुते ॥ १३॥

शूलहस्तगदापाणे वनमालासुकन्धर ।
यज्ञसूत्रधरब्रह्मन् दत्तात्रेय नमोऽस्तुते ॥ १४॥

क्षराक्षरस्वरूपाय परात्परतराय च ।
दत्तमुक्तिपरस्तोत्र दत्तात्रेय नमोऽस्तुते ॥ १५॥

दत्त विद्याढ्यलक्ष्मीश दत्त स्वात्मस्वरूपिणे ।
गुणनिर्गुणरूपाय दत्तात्रेय नमोऽस्तुते ॥ १६॥

शत्रुनाशकरं स्तोत्रं ज्ञानविज्ञानदायकम् ।
सर्वपापं शमं याति दत्तात्रेय नमोऽस्तुते ॥ १७॥

इदं स्तोत्रं महद्दिव्यं दत्तप्रत्यक्षकारकम् ।
दत्तात्रेयप्रसादाच्च नारदेन प्रकीर्तितम् ॥ १८॥

॥ इति श्रीनारदपुराणे नारदविरचितं दत्तात्रेयस्तोत्रं सुसम्पूर्णम् ॥

श्री गुरुमूर्ति दक्षिणामूर्ति तत्व से जुड़ें तथा भोग मोक्ष दोनों का अधिकारी बने । शास्त्रीय पद्धति से दीक्षा प्राप्त करें बिना ₹1 खर्च कीए ही..... ।